अध्याय तृतीय
शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय–3

अनुसंधान विधि, उपकरण एवं प्रविधिया

3.1 प्रस्तावना :–

प्रथम दो अध्याय में देखा कि प्रथम अध्याय में प्राथमिक शिक्षा का अर्थ, विविध योजना, आयोग द्वारा दी गई सीफारीश और सर्वशिक्षा अभियान योजना की विस्तार से विवरण। दूसरे अध्याय में संबंधित अनुसंधान साहित्य का पुनरावलोकन और अगले अध्ययन और यह अध्ययन में अंतर क्या है। इस अध्याय में अनुसंधान विधि, उपकरण एवं प्रविधि के बारे में दर्शाया गया है।

3.2 अनुसंधान अभिकल्प/प्रारूप :–

अनुसंधान कार्य में सही शिक्षा की और अग्रसर होने के लिए अनुसंधान अभिकल्प बनाना आवश्यक है। अनुसंधान अभिकल्प अनुसंधान संचालन की तैयारी बताता है। अनुसंधान अभिकल्प अन्वेषण की विशिष्ट और आधारभूत योजना है। एक शोधकर्ता अपने अनुसंधान को आरंभ करने से पूर्व उसके पक्षों के संबंध में पहले ही निर्णय लेकर नियोजन करता है। शोध प्रारुप के अंतर्गत कमबद्ध रुप में प्रत्येक सोपान के संबंध में विवरण दिया जाता है। जिसे शोध प्रकिया कहते है। शोध अभिकल्प में अनुसंधान के प्रमुख पक्षो के आधार पर ढांचा विकसित किया जाता है। जिसमें तार्किक कम को महत्व दिया जाता है। शोध के उदेश्यों तथा परिकल्पानाओं के आधार पर शोध का प्रारूप/अभिकल्प तैयार किया जाता है। शोध अभिकल्प में निम्नलिखित अवयवो को सम्मिलित किया जाता है।

अ. शोध विधि या शोध व्यूह।

ब. न्यादर्श का प्रारूप तथा विधियाँ

स. शोध उपकरणों का चयन।

द. सांख्यिकी प्रविधियों का चयन।

3.3 शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य मे शोधकर्ता ने वर्णात्मक विधि का प्रयोग करके सर्व विधि , विद्यार्थी मुलाकात ओर निरीक्षण प्रयुक्ति का प्रयोग किया गया है।

3.3.1 जनसंख्या:-

प्रस्तुत शोध कार्य में गुजरात राज्य के 26 जिलो में से साबरकांठा जिला चुना गया हैं। साबरकांठा जिले की कुल 13 तहसील में से इडर तहसील को चुना गया है। इडर तहसील में कुल 28 झुथ शाला है। 28 झुथ शाला में से एक बडोली झूथ शाला चुनी गई है। 28 झूथ शाला शोध की जनसंख्या निधारित की है।

3.3.2 न्यादर्श की प्रविधि :-

न्यादर्श चयन करने के लिए अनेक विधियों का शोधकार्य में उपयोग किया जाता है। जिसमें संभावना न्यादर्श (Probability Sampling), असंभावना न्यादर्श (Non Probubility Sampling) ऐसे दो प्रकार हैं। उसमें से प्रस्तुत अध्ययन में संभावना न्यादर्श की दैव न्यादर्श (Random Sampling) विधि का उपयोग किया गया है।

3.3.3 न्यादर्श चयन की विधि :-

प्रस्तुत अध्ययन में संशोधनकर्ता ने दैव न्यादर्श (Random Sampling) विधि में लोटरी विधि का प्रयोग किया। इसमें प्रथम संशोधनकर्ता ने

गुजरात राज्य के 26 जिलो की पुड़िया बनाई उसको डिब्बे में डालकर एक चिठ्ठी/पर्ची निकाली गई उसमें साबरकांठा जिला आया। उसके बाद साबरकांठा जिले के 13 तहसील की चिठ्ठिया बनाई और एक डिब्बे डालकर तहसील चुना और उसके बाद झूथ शाला की चिठ्ठिया बनाकर एक झूथ शाला का चयन किया।

3.3.4 न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने लोटरी विधि द्वारा इडर तहसील की 28 झूथ शाला में से बंडोली झूथ शाला मे से 7 शाला का न्यादर्श चयन किया।

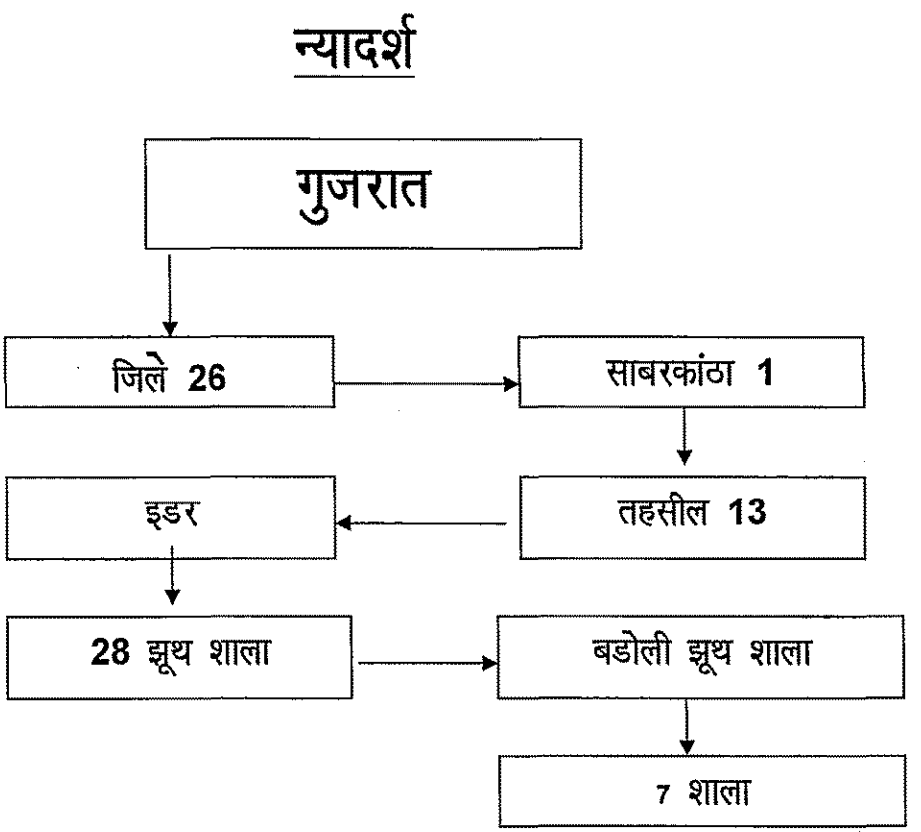

3.3.5 प्रदत्त संकलन :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिए वर्णानात्मक अनुसंधान की सर्वे पध्धती का उपयोग करके निम्न साधनों का प्रयोग करके प्रदत्त संकलन किया।

➢ प्रयोग किए गए साधन (Tools)

(1)) टी.एल.एम.चेकलिस्ट (2) साक्षात्कार (3) निरीक्षण

3.3.6 साधनों का निर्माण और विकास :–

टी.एल.एम.चेकलिस्ट :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा कक्षा 5 के हरएक विषय में उपयोग होने वाली सभी अध्ययन अध्यायन सामग्री (टी.एल.एम..) को समाया गया। इसका निर्माण करने में जिला शिक्षा प्रशिक्षण भवन (डायट) द्वारा निर्माण किया गया विषयवस्तु विश्लेषण पुस्तिका का आधार लिया गया। इस प्रकार टी. एल.एम.चेकलिस्ट का निर्माण किया गया।

➢ साक्षात्कार और निरीक्षण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने साक्षात्कार और निरीक्षण में चैकलिस्ट के आधार पर शिक्षकों और विद्यार्थी से शोध के अनुरूप प्रदत्त संकलन किया। जिसमें शिक्षकों को टी.एल.एम.बनाने/निर्माण की प्रक्रिया के बारे में और विद्यार्थियों को टी.एल.एम.के उपयोग के बारे में साक्षात्कार किया। निरीक्षण मे टी.एल.एम.मौजूद है या नहीं , टी.एल.एम.रखने की व्यवस्था आदि विगत देखी गई।

3.3.7 शोध साधनों का प्रयोग–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रथम दिन सभी शाला में जा कर सभी शिक्षकों को चैकलिस्ट शाला के प्राचार्य जी को बातचीत करके दीया गया। उसके एक दिन बाद हर एक शाला में एक–एक दिन जाकर सभी शिक्षक से चैकलिस्ट ईकठा किया गया और शिक्षक और विद्यार्थी से साक्षात्कार किया गई। इस प्रकार शोधकर्ता द्वारा चैकलिस्ट द्वारा शोध के अनुरूप प्रदत्त संकलन की कार्यवाही के अनुरूप उपयुक्त साधनों का उपयोग किया गया।

3.3.8 प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण तीन स्तर में किया गया।

1. टी.एल.एम.मौजूद है या नहीं।
2. टी.एल.एम.का विषयवस्तु से संबंध है या नहीं विश्लेषण करना।
3. टी.एल.एम.का कक्षा में उपयोग हो रहा है या नहि।

- टी.एल.एम.मौजूद है या नहीं इसके लिए टी.एल.एम. चैकलिस्ट का उपयोग किया गया।
- टी.एल.एम.का विषयवस्तु से संबंध है या नहीं इसके लिए पाठ्यपुस्तक और विद्यार्थी साजात्मकार का उपयोग किया गया।
- टी.एल.एम.का कक्षा में उपयोग हो रहा है। इसके लिए विद्यार्थी साक्षातकार का उपयोग किया गया।

3.3.9 प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण :-

1. गुणात्मक प्रदत्तों के लिए :-

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा गुणात्मक प्रदत्त के लिए साक्षात्कार और निरीक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को गुणात्मक/वर्णानात्मक रूप में शिक्षकों के व्यूह के मुताबिक दर्शाया गया हैं, विश्लेषण किया गया है।

सारांशः-

इस प्रकरण में प्रदत्त संकलन प्रक्रिया और प्रदत्त विश्लेषण पविद्धि के बारे में. दर्शाया गया हैं, अगले प्रकरण में प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया है।